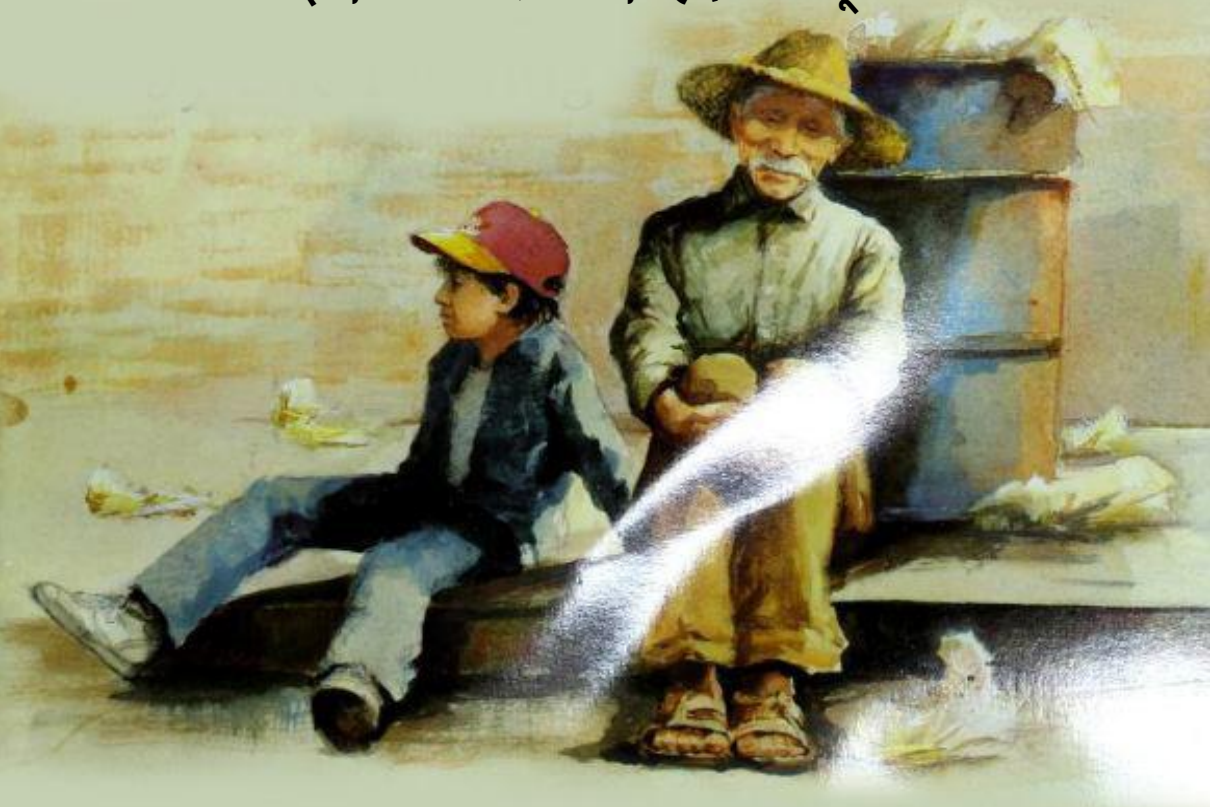


दिन की दिहाड़ी

ईव, चित्र : रोनाल्ड, हिंदी : विदूषक



दिन की दिहाड़ी

ईव, चित्र : रोनाल्ड, हिंदी : विदूषक







फ्रांसिस्को अपने दादाजी और अन्य लोगों के साथ पार्किंग में खड़ा था.
फ्रांसिस्को पहली बार वहां आया था.
फिर एक ट्रक आया और रुका.
ड्राइवर ने तीन उँगलियाँ उठाईं. "ईंट चुनाई के काम के लिए मुझे तीन आदमियों की ज़रूरत है," उसने कहा.
यह सुनते ही पांच आदमी उस ट्रक में झट से कूदे.
"सिर्फ तीन," ड्राइवर ने कहा. फिर दो को उतरना पड़ा.

जो मजदूर पार्किंग में बचे थे वे अपनी किस्मत को कोसते रहे और बुदबुदाते रहे.

फ्रांसिस्को के दादाजी सर्दी से कांप रहे थे. “बहुत ठंड है,” उन्होंने कहा.

“अभी बहुत सुबह है इसीलिए ठंड है. आप देखेंगे बाद में गर्मी हो जाएगी,” फ्रांसिस्को ने स्पेनिश में कहा.

“तुम इस लड़के को साथ में क्यों लाए?” एक मजदूर ने पूछा. “लड़के के साथ तुम्हें कोई भी मजदूरी पर नहीं रखेगा. लड़के को तो स्कूल में होना चाहिए.”

“आज शनिवार है,” फ्रांसिस्को ने कहा. “मेरे दादाजी अभी इंग्लिश नहीं बोल पाते हैं. वो बस दो दिन पहले ही कैलिफ़ोर्निया आए हैं और हमारे साथ रह रहे हैं.”

फिर फ्रांसिस्को ने आगे कहा, “पिताजी की मृत्यु के बाद से हम लोग अकेले हैं. मैं अपने दादाजी को मजदूरी दिलाने में मदद करूंगा.”

फिर उसने दादाजी के ठंडे, खुरदुरे हाथ को अपने हाथों से सहलाया और वो मुस्कराया. दादाजी किसी बूढ़े पेड़ की तरह दुबले-पतले और ऊंचे थे. फ्रांसिस्को उन्हें बहुत चाहता था. पैसे इकट्ठे होने के बाद वो दादाजी के लिए एक जैकेट खरीदेंगे बिल्कुल वैसी ही जैसी फ्रांसिस्को पहने था, जिससे उसकी लम्बी आस्तीनों से दादाजी के हाथ ढँक जाएँ. साथ में वो दादाजी के लिए फ्रांसिस्को जैसी एक टोपी भी खरीदेंगे.



फिर एक वैन आई. उस पर “बेंजामिन माली” लिखा था.

फ्रांसिस्को ने दादाजी का हाथ छोड़ा. फिर वो बाकी लोगों के झुरमुटे में से निकलता हुए सबसे पहले उस वैन के सामने आकर रुका.

“एक आदमी,” ड्राईवर ने कहा. “बागवानी के लिए.” वो आदमी जवान था और उसकी घनी मूंछें थीं. वो सिर पर फ्रांसिस्को जैसी ही टोपी पहने था. शायद उसकी टोपी ज्यादा साफ़ थी. फ्रांसिस्को को वो एक अच्छा संकेत लगा.

“हमें ले चलिए मिस्टर बेंजामिन. हम दोनों को.” फ्रांसिस्को ने अपने दादाजी की ओर इशारा करते हुए कहा. फिर उसने अपनी टोपी को आँखों की ओर झुकाया. “देखिए, मेरे दादाजी एक अच्छे माली हैं, पर उन्हें अभी इंग्लिश अच्छी तरह नहीं आती है. सभी जगह बगीचे तो एक जैसे होते हैं. क्यों ठीक है न? चाहें वो मेक्सिको में हों या अमरीका में?”

फिर फ्रांसिस्को ने तेज़ी से हाथ हिलाकर दादाजी को बुलाया.
“आपको एक मजदूर की कीमत में दो मजदूर भी मिलेंगे,” उसने कहा.
“मैं अपने काम के लिए कुछ मजदूरी नहीं लूँगा.”



वो आदमी मुस्कराया. "ठीक है. मुझे यकीन है. पर मैं मिस्टर बेंजामिन नहीं हूँ. मुझे बेन बुलाओ."

फिर बेन ने फ्रांसिस्को की तरफ इशारा किया. "तुम अपने दादाजी के साथ पीछे बैठो. पूरे दिन की मजदूरी साठ डॉलर मिलेगी."

फ्रांसिस्को ने हामी में अपना सर हिलाया. उसकी साँस तेज़ी से चलने लगी. एक दिन के काम की इतनी ज्यादा मजदूरी? माँ पैसे देखकर कितनी खुश होंगी. माँ ज्यादा पैसे नहीं कमा पाती थीं. शायद आज सबको भर पेट खाना मिलेगा. साथ में कुछ मिठाई भी.

फिर फ्रांसिस्को ने वैन के पीछे वाला दरवाज़ा खोला और उसमें अपना बैग डाला जिसमें माँ ने दोपहर का खाना पैक किया था. फिर उसने दादाजी की चढ़ने में मदद की.

एक ऊंचे, लम्बे-तगड़े आदमी ने भी वैन में चढ़ने की कोशिश की. फ्रांसिस्को ने उसे पीछे धकेल दिया. वो आदमी ताकतवर था. वो एक असली मजदूर था.



“आज हमें बागवानी करनी पड़ेगी,” उसने वैन चलने के बाद दादाजी को बताया.

“पर मुझे को बागवानी बिल्कुल भी नहीं आती. मैं तो पेशे से एक बढ़ई हूँ. मैं सारी ज़िन्दगी शहर में रहा हूँ.”

“यह काम आसान होगा,” फ्रांसिस्को ने आती-जाती गाड़ियों की तरफ अपना हाथ हिलाते हुए कहा. “फूल, गुलाब और कुछ ऐसा ही काम होगा.” उसने एक महिला को देखकर उसके सम्मान में अपनी टोपी उठाई. “सेनोरा,” उसने बड़े अदब से कहा. पर उस महिला ने सुना ही नहीं.

फिर वैन हाईवे से मुड़कर एक पतली सड़क पर गई और कुछ देर बाद रुकी. वहां पर हल्की चढ़ाई थी और कुछ नए मकान बने थे. कुछ मकान अभी पूरे नहीं हुए थे. मजदूर घर की छतों पर चढ़े थे और कोलतार की अच्छी खुशबू आ रही थी.

उस ढाल पर सुन्दर सफ़ेद फूल थे जिनके साथ खुरदुरी हरी डंडियाँ थीं. नीचे छह कचरे के ड्रम रखे थे.

फिर तीनों वैन से नीचे उतरे. पर बेन ने गाड़ी का इंजन चलता ही रखा.



“मैं चाहता हूँ कि तुम इस ढाल की पूरी खरपत को साफ़ करो,” बेन ने दादाजी से कहा. “सावधानी से करना जिससे जड़ें भी बाहर निकल आयें.” फिर उसने ड्रम दिखाते हुए कहा, “खरपत को उनमें फेंक देना.”

“ठीक है,” उत्तर फ्रांसिस्को ने दिया.

“मुझे अभी एक और जगह काम है,” बेन ने कहा. “मैं तीन बजे तुम्हें यहाँ से वापिस ले जाऊँगा. यहाँ काफी गर्मी होगी और तुम्हारे दादाजी को एक टोपी की ज़रूरत होगी.” फिर उसने फूस की एक टोपी दादाजी को दी.

“शुक्रिया,” दादाजी ने कहा.

“ठीक है शाम को फिर मिलेंगे. मेहनत से काम करना.
आपका दिन शुभ हो.”





“उसने क्या कहा?” दादाजी ने वैन चले जाने के बाद पूछा.

“उसने कहा कि हमारा दिन शुभ हो. यहाँ सभी लोग ऐसा ही कहते हैं.”

“तुम बहुत अच्छी इंग्लिश जानते हो फ्रांसिस्को,” दादाजी ने खुश होते हुए कहा.

फ्रांसिस्को ने अपना सिर हिलाया और वो मुस्कुराया. फिर वे ढाल पर चढ़े. वहाँ फ्रांसिस्को ने अपनी जैकेट बाड़ से लटका दी. फिर उसने एक नुकीली डंडी को खींचा और उसकी जड़ों से मिट्टी झाड़ी. “यह खरपत हैं. फूलों को बिल्कुल हाथ न लगायें.”

फिर दादाजी उसे देखकर मुस्कुराये. फ्रांसिस्को को उनके सफ़ेद दांत साफ़ दिखाई दिए.





उन्होंने पूरी सुबह काम किया.

एक छोटा कुत्ता बाड़ के पीछे से उनपर भूंकता रहा.

फिर उन्हें एक नारंगी रंग की कार दिखी.

एक नए घर के पिछवाड़े में पानी का ताल था. फ्रांसिस्को को वहां पर लोगों के नहाने की आवाज़ सुनाई दी. पानी के छपाकों की आवाज़ सुनकर फ्रांसिस्को को और ज्यादा गर्मी लगने लगी. उसके कंधे और हाथ दुखने लगे. वो सोचने लगा कि आज शाम को माँ कितनी खुश होंगी.

“साठ डॉलर?” वो आश्चर्य से कहेंगी और फिर वो, फ्रांसिस्को और दादाजी को गले लगाएंगी. “यह तो बड़ी दौलत है.”



दोपहर को भोजन में फ्रांसिस्को और दादाजी ने तोर्टिया (मक्का की रोटी) और टमाटर खाए. फिर उन्होंने माँ की दी गई बोतल में से पानी पिया.

एक घंटे में उनका सारा काम पूरा हो जायेगा.

“कितना सुन्दर है,” दादाजी ने कहा.

फ्रांसिस्को ने भी उत्तर दिया, “हाँ, वाकई में!”

उसके बाद फ्रांसिस्को और दादाजी ने हाथ मिलाया.

फ्रांसिस्को को उतनी खुशी पहले कभी नहीं हुई थी.

आज उसने न सिर्फ दादाजी की मदद की थी, उसने खुद भी मेहनत की थी.

काम खत्म करके वो सड़क के किनारे बैठ गए और वैन के आने का इंतज़ार करने लगे. फिर जब वैन आई तब वे दोनों खड़े हुए और उन्होंने अपने कपड़ों के ऊपर से मिट्टी झाड़ी.



बेन गाड़ी में से बाहर निकला. “अरे बाप रे!
यह तुमने क्या किया!” उसने कहा.

“आपको लग रहा था कि हम इतना अच्छा काम
नहीं कर पाएंगे?” फ्रांसिस्को हँसना चाहता था. परन्तु
बेन को एक बड़ा झटका लगा.

फ्रांसिस्को ने कूदते हुए कहा, “हमने बड़ी मेहनत
से काम किया है.”

“मुझे ऐसा नहीं लगता!” बेन ने कहा. “तुम लोगों
ने मेरे सारे पौधे उखाड़ दिए हैं और खरपत वहीं रहने
दी है.”

फिर फ्रांसिस्को ने दादाजी की ओर देखा. “पर
खरपत पर तो फूल हैं...” उसने कहा.

बेन ने कहा, “वो सफ़ेद फूल, खरपत के हैं! तुमने
मेरे सारे अच्छे पौधों को उखाड़ कर बर्बाद कर दिया.”
फिर बेन ने अपनी टोपी उतारी और उसे वैन पर कस
कर मारा.





“क्या हुआ? क्या हमसे कोई गलती हुई?” दादाजी ने स्पेनिश में फ्रांसिस्को से पूछा.

गुस्से के मारे बेन की मूँछे हिल रही थीं. “तुमने को कहा था कि तुम्हारे दादाजी एक अच्छे माली हैं. पर उन्हें तो खरपत और फूलों के बीच का अंतर तक नहीं पता?”

दादाजी ने दोनों को घूरा. “क्या हुआ फ्रांसिस्को? ज़रा मुझे बताओ,” उन्होंने कहा.

“हमने पौधे निकाल दिए और खरपत वहीं छोड़ दी,” फ्रांसिस्को ने हल्के से स्पेनिश में कहा. उसके लिए दादाजी को सीधे देख पाना मुश्किल हो रहा था.

“उन्हें लगा कि हमें बागवानी के बारे में पता होगा,” दादाजी ने कहा. वो बहुत तेज़ी से और गुस्से में स्पेनिश में बोल रहे थे. तुमने उससे झूठ बोला. क्यों है न?”

“हमें दिन का काम जो चाहिए था...”

“पर काम के लिए झूठ नहीं बोला जाता.”



अब दादाजी की आवाज़ में गुस्से की बजाए दुःख ज्यादा था। “देखो बेटा,” उन्होंने फ्रांसिस्को के कंधे पर अपना हाथ रखते हुए कहा। “बेन से पूछो कि हम अब क्या कर सकते हैं। उससे कहो कि हम कल वापिस आयेंगे। अगर वो राज़ी होता है तो हम खरपत उखाड़कर पौधों को दुबारा वापिस लगा देंगे।”

फ्रांसिस्को को अपना दिल बैठता हुआ नज़र आया। “पर दादाजी, तब तो हमें दुगना काम करना पड़ेगा। और फिर कल सन्डे का दिन है। कल टेलीविज़न पर एक अच्छा प्रोग्राम आएगा। और फिर चर्च भी तो जाना है।” फ्रांसिस्को को लगा कि चर्च का नाम सुनकर दादाजी का सोच शायद बदल जाए।

“कल हम न टेलीविज़न देखेंगे और न ही चर्च जायेंगे,” दादाजी ने कहा। “हमें झूठ की कीमत चुकानी ही होगी। जो मैंने कहा, वो बेन को बताओ। और उससे पूछो कि दुबारा बोने के बाद पौधे जिंदा तो रहेंगे।”

बेन ने कहा पौधे जिंदा रहेंगे। “क्योंकि उनकी जड़े अभी भी हैं इसलिए सुबह जल्दी बोने से वो जिंदा रहेंगे। अपने दादाजी से कहो कि मुझे उनका प्रस्ताव पसंद आया और मैं तुम दोनों को कल सुबह यहाँ छोड़ूंगा।”

फिर तीनों वैन में बैठे।



फ्रांसिस्को चुपचाप खिड़की से सटकर बैठा रहा. इस बार उसने आती-जाती कारों का हाथ हिलाकर स्वागत नहीं किया. उसने अपनी टोपी भी नहीं उठाई. उसने दादाजी को मजदूरी दिलाने में मदद ज़रूर की थी. पर झूठ की वजह से दिन खराब हो गया. आंसुओं से उसका गला जलने लगा.

पार्किंग पूरी तरह खाली थी. कचरे का ड्रम चाय-कॉफ़ी के कपों और सैंडविच की प्लेटों से लबालब भरा था.

बेन ने उन्हें उतारा.



“देखो,” उसने कहा. “अगर पैसों की ज़रूरत है तो मैं तुम्हें आधे पैसे अभी दे सकता हूँ.” फिर उसने अपनी जेब से बटुआ निकाला, पर दादाजी ने हाथ से उससे मना किया.

“उससे कहना कि कल काम ख़त्म करने के बाद ही हम पैसे लेंगे.”

फ्रांसिस्को के दादाजी और बेन ने एक-दूसरे को देखा, और ऐसा लगा जैसे बिना शब्दों के उन्होंने एक-दूसरे से कुछ कहा हो. बेन ने अपना बटुआ वापिस जेब में रख लिया.

“कल सुबह छह बजे,” बेन ने कहा. “हाँ, अपने दादाजी से कहना कि मैं उन जैसे भले आदमी को हफ्ते में एक दिन से ज्यादा भी काम दे सकता हूँ.”

यह सुनकर फ्रांसिस्को बहुत खुश और उत्तेजित हुआ. एक दिन से ज्यादा काम!

बेन अभी भी बोल रहा था. “असली बात तुम्हारे दादाजी को पहले से ही पता है. और बाकी बागवानी का काम मैं उन्हें सिखा सकता हूँ.”





फ्रांसिस्को ने अपना सिर हिलाया. उसे अब सबकुछ समझ में आया.
आज फ्रांसिस्को ने एक ज़रूरी सबक सीखा था.

फिर फ्रांसिस्को ने दादाजी के ठंडे, खुरदुरे हाथ को अपने हाथ में लिया
और कहा, “दादाजी अब घर चलें.”



अनेकों अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से पुरुस्कृत पुस्तक